भूमंडलीकरण के दौर में जनसंचार माध्यमों में हिन्दी की प्रासंगिकता

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र

शोध सारांश–

उल्लेखनीय है यदि रूपान्तरण हिन्दी खुद अत्याधुनिक संचारतंत्र, विज्ञान प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर करती तो बात कुछ और हो जाती। एक बात विशेष ध्यान देने की है कि साहित्य के वर्चस्व तथा भाषा के वर्चस्व में सीधा सम्बन्ध नहीं है। भाषा का वर्चस्व आर्थिक या वाणिज्यिक कारणों से होता है। भारत को इस दिशा में प्रयत्न करने की विशेष आवश्यकता है। संस्कृति से भाषा और भाषा से संस्कृति प्रभावित होती है, हिन्दी का प्रयोग जो विदेशियों द्वारा हो रहा है उससे हिन्दी का सांस्कृतिक जुड़ाव जो सहज रूप में था, वह अब धीरे–धीरे बढ़ रहा है। तकनीकी दृष्टि से आज ब्लागिंग या चिट्ठाकारी में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत के 10 राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हिमांचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली में हिन्दी राजभाषा है। राजभाषा बनने के बाद हिन्दी ने देश के सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में सम्पर्क भाषा के रूप में अपनी पहचान बनायी है। इसके अलावा विश्व के देशों में भी हिन्दी भाषा को प्राथमिकता दी जा रही है। जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग इधर तेजी से बढ़ रहा है।

बीज शब्द– *भूमंडलीकरण, जनसंचार माध्यम, हिन्दी, बाजार।*

हिन्दी विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र की भाषा है। वर्तमान समय में जब दुनिया 21वीं सदी में वैश्वीकरण की ओर बढ़ रही हैं तो ऐसे में विश्व की भाषाओं व संस्कृतियों का भी वैश्वीकरण होगा। ऐसे में हिन्दी विश्व को निकट लाने के लिये एक सेतु का कार्य करेगी। वर्तमान में भारत आर्थिक शक्ति बनने की प्रक्रिया से गुजर रहा है। इसका प्रभाव भारत की राजभाषा पर भी पड़ेगा। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पाद को हिन्दी के माध्यम से ही एक दूसरे तक पहुँचा रही हैं। नोबल पुरस्कार विजेता विश्व बैंक के पूर्व अर्थशास्त्री जोसेफ स्ट्रिगालियस ने 'दि आब्जरवर लंदन' में कहा है कि भूमण्डलीकरण जिस कार में सवार होकर दिग्विजय के लिये निकलता है, उसके चार पहिये हैं–निजीकरण, पूँजी बाजार का उदारीकरण, बाजार आधारित मूल्य निर्धारण व मुक्त बाजार। भूमण्डलीकरण अपने मुक्त व्यापार के लिये भाषा व संस्कृति को माध्यम बनाता है। भूमण्डलीकरण ने वास्तव में हिन्दी की ताकत को पहचाना है इसलिए आज हिन्दी की भूमिका वैश्विक स्तर की हो गई है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपने भावों को व्यक्त करने के लिये एक माध्यम की आवश्यकता होती है और वह माध्यम भाषा के रूप में होता है जिससे वह अपने विचारों को दूसरे मानव को समझा और बता सकता है जिसे संचार कहा जाता है। संचार की भाषा यदि मातृभाषा हो तो संचार सुलभ तथा सुगम हो जाता है। भावों के संचार के लिए जिन साधनों की जरूरत होती है उसे भाषा कहा जाता है। यह भाषा विभिन्न प्रकार की प्रकार की होती है और भावों का स्थानान्तरण ही जनसंचार कहलाता है। स्पष्ट है कि विचार विनियम के साधन को भाषा

कहा जाता है। मानव ने जब से होश संभाला अपने विकास के साथ भाषा के परिमार्जन एवं परिष्कार के लिए भी सचेत रहा है, क्योंकि यह भी उसके दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है।

भारत में सांस्कृतिक विभिन्नता एवं भौगोलिक वैभिन्य के साथ–साथ भाषायी विविधता भी उसका वैशिष्टय है। जिसमें हर क्षेत्र एवं प्रान्त की अपनी बोली अपनी भाषा है। भारत में कहावत है कि कोस कोस में बदले पानी, चार कोस में बानी'' किन्तु कोई एक भाषा जो क्षेत्रीयता एवं प्रान्तीयता को बाँधकर एक बड़े जन समूह के हृदय पर राज्य करने लगती है तभी वह देश के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करती है। जिसका परिणाम यह होता है कि वह भाषा जनसंचार का माध्यम बनती है।

भूमंडलीकरण से उत्पन्न नई परिस्थितियों के मद्देनजर विश्व स्तर पर हिन्दी के प्रचार–प्रसार की वर्तमान में आवश्यकता बढ़ गई है। हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा हो गई है। लगभग एक करोड़ बीस लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 150 देशों में बिखरे हुए हैं जिनमें आधे से अधिक हिन्दी से अच्छे से परिचित ही नहीं हैं बल्कि उसे व्यवहार में भी लाते हैं। विगत गत चौहत्तर वर्षों में हिन्दी की शब्द संपदा का जितना विस्तार हुआ है उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ हो। विदेशों में हिन्दी के पठन–पाठन और प्रचार–प्रसार का कार्य हो रहा है। भारत के बाहर विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था लोकप्रिय हो रही है। जनसंचार माध्यमों, फिल्मी गीतों ,हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं आदि ने भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अपनी अहम भूमिका अदा की है।

हिन्दी को तकनीक व कम्प्यूटर से जोड़ने के लिये सी डैक, पुणे ने मंत्रा साफ्टवेयर विकसित किया है, जिससे विश्व के लोगों को हिन्दी सिखायी जा सके। गूगल सर्च इंजन भी हिन्दी की ओर अभिमुख है। अभी हाल ही में गूगल ने ऐलान किया है कि हम एक लाख हिन्दी तकनीकी प्रशिक्षु लोगों को भर्ती करना चाहते हैं। इसके अलावा बालीवुड ने भी हिन्दी को शिखर तक पहुँचाया है। प्रत्येक भाषा केवल भाषा ही नहीं होती अपितु समाज, संस्कृति, इतिहास व उसके भावी लक्ष्यों को प्रकट करने का माध्यम भी होती है। वास्तविकता यह है कि हिन्दी की लोकप्रियता में जो कमी आयी है–वह राजशक्ति व लोकशक्ति के आपसी समन्वय के अभाव के कारण है। हिन्दी आज भी आम आदमी की लोक भाषा है। यह जनसंचार में सबसे ज्यादा निखरी हुयी भाषा है। यह समय हिन्दी भाषा को सीमित व संकुचित करने का नहीं है, अपितु उसे शक्तिवान व सामर्थ्यवान बनाने का है। वैश्वीकरण के उपरान्त भारतीय बाजार में वृद्धि के साथ हिन्दी की भूमिका और भी व्यापक हो गयी है। आज इस युग में जो भी उत्पाद बिक रहे हैं उसमें हिन्दी एक प्रभावशाली भूमिका का निर्वहन कर रही है।

एक ध्रुवीय शक्ति और वर्तमान परिवेश में पिछड़े व विकासशील राष्ट्र की जनता के समक्ष सबसे प्रमुख चुनौती भाषायी अस्मिता को बनाये रखना है। विभिन्न राजनीतिक शासन प्रणालियाँ, आक्रामक बाजार व तकनीकी शक्तियों के भयावह परिदृश्य में यह आवश्यक हो गया है कि हिन्दी जैसी सशक्त देशज भाषा के माध्यम से बहुआयामी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सुदृढ़ किया जाये। हिन्दी हर युग में इस देश की आवाज है। आज उसके सामने नई पीढ़ी है जिसके स्वप्न हरे हैं। इस भाषा को नवीनतम ज्ञान, प्रौद्योगिकी, आत्मनिर्भरता से युक्त होने का भरपूर अवसर मिलना चाहिए। संचार माध्यमों ने हिन्दी को वैश्विक रूप देने में सकारात्मक योगदान दिया है। हिन्दी को जनभाषा के स्वरूप के निकट जाना होगा।

जनसंचार माध्यमों का इतिहास बहुत पुराना है। इसका साक्ष्य पौराणिक काल के

मिथकीय पात्रों एवं ग्रन्थों में खोजा जा सकता है। देवर्षि नारद को भारत का पहला समाचार वाचक एवं प्रचारक माना जाता है जो वीणा की मधुर झंकार के साथ पृथ्वी और स्वर्गलोक के बीच संवाद सेतु का कार्य करते थे। पुराणों में आकाशवाणी का भी जिक्र आता है जो निर्भीक जनसंचार का काम करती थी। इसी तरह महाभारत में महाराज धृतराष्ट्र को युद्ध का विवरण सुनाने के लिए संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान की गयी थी।

राजतंत्र के समय में जनभावनाओं को राजा एवं राजदरबार तक पहुँचाने और राजा का संदेश जनता के बीच प्रसारित करने के प्रमाण देखने को मिलते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक महान जैसे सम्राटों के समय स्थाई महत्त्व के संदेशों के लिए शिलालेखों और तात्कालिक सूचना के लिए स्याही या रंगों से संदेश लिखकर प्रदर्शित किया जाता था परन्तु राज दरबारों के समानान्तर भारतीय संचार परम्परा में लोक का भी प्रयोग हो रहा था। इसका प्रयोग प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जो आज भी विविध रूपों से समाज में जनसंचार का कार्य कर रहा है। ''भीमबेटका के गुफाचित्र इसके प्रमाण हैं। यह समानान्तर व्यवस्था बाद में कठपुतली और लोक नाटकों की विविध शैलियों के रूप में दिखाई पड़ती है।''

आजादी के बाद के प्रमुख हिन्दी अखबारों में नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, अमर किरण, आज, विश्वामित्र, संमार्ग, पंजाब केसरी आदि और पत्रिकाओं में धर्मयुग, दिनमान, रविवार, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, इंडिया टुडे, आउटलुक, आजकल, नया ज्ञानोदय, समालोचना आदि का नाम लिया जा सकता है। ''सन् 2000 ई0 में 10 भाषाओं और बोलियों में समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ था। सबसे अधिक समाचार–पत्र हिन्दी (19685) और उसके बाद अंग्रेजी (7115) और उर्दू (2848) में प्रकाशित हुए थे।''

पत्र पत्रिकाओं के बाद जिस माध्यम ने दुनिया को सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह है 'रेडियो' का माध्यम है। सन् 1895 ई0 में इटली के जी0 मार्कोनी ने वायरलेस के जरिये ध्वनियों और संकेतों को एक जगह से दूसरी जगह भेजने में कामयाबी हासिल की, तब रेडियो जैसा माध्यम अस्तित्व में आया। भारत ने सन् 1921 ई0 में मुम्बई में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' ने डाकतार विभाग के सहयोग से पहला संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया। वर्ष सन् 1927 ई0 में निजी स्वामित्व वाले ट्रांसमीटरों द्वारा प्रसारण प्रारम्भ हुआ । सन् 1930 ई0 में इन ट्रांसमीटरों को सरकार ने अपने हाथों में ले लिया और 'इंडियन ब्राडकास्टिंग सर्विस' के नाम से प्रसारण होने लगा। सन् 1936 ई0 में इसका नाम बदलकर 'आल इंडिया रेडियो' किया गया और पुनः सन् 1957 ई0 में इसे 'आकाशवाणी' के नाम से पुकारा जाने लगा। एक धर्म निरपेक्ष लोकहितकारी राष्ट्र के जन माध्यम के तौर पर देश के नव निर्माण में आकाशवाणी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सूचना और शिक्षा के अलावा हिन्दी को भी विकसित करने में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज आकाशवाणी नेटवर्क में 208 केन्द्र हैं, जिनकी कवरेज 90 प्रतिशत क्षेत्र की एक अरब से अधिक जनसंख्या तक है।

आज हिन्दी का व्यापक प्रयोग जन संचार माध्यमों की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण के दबावों ने हिन्दी को जरूरत और माँग के अनुकूल ढालने में महती भूमिका निभाई है। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी। चूँकि हिन्दी भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर बना है इसलिए देवनागरी लिपि कम्प्यूटर यंत्र की प्रक्रिया के अनुकूल है और कम्प्यूटर युग में हिन्दी

सॉफ्टवेयर और यादा विकसित करने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि देवनागरी में इंटरनेट पर भेजने की प्रक्रिया तीव्र गति से विकसित करने की जरूरत है।

हिन्दी बहुत तेजी से विश्व पटल पर प्रथम भाषा का दर्जा प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो रही है। हिन्दी न केवल विश्व की समृद्ध बल्कि यह सर्वाधिक वैज्ञानिक अभिव्यक्तिपूर्ण और सुविधाजनक भाषा भी है। भारत के नागरिकों को विश्व समाज से जोड़ने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी आज संचार माध्यमों की शक्ति हिन्दी बन रही है। जो शब्द कोश से विश्वकोश की ओर प्रयासरत है।

संचार माध्यमों के सहयोग से हिन्दी भारत की ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक विशाल जनसमूह की भाषा के रूप में उभर रही है। आज भारतीय जनमानस रेडियो, टेलीविजन तथा इंटरनेट जैसे जनमाध्यमों की सहायता से हिन्दी में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को देखकर हिन्दी भाषा से अवगत होते हुए अपना ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। इन माध्यमों में वेब,मीडिया हिन्दी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हिन्दी भाषा में शिक्षण का प्रचार–प्रसार वर्तमान काल में नए जनसंचार माध्यमों के कारण गतिमान बन रहा है। आकाशवाणी से लेकर स्थानीय रेडियो स्टेशन (एल0आर0एम0), सामुदायिक रेड़ियो स्टेशन एफ. एम. गोल्ड, डी.टी.एच. सेवा, डी.डी. के सभी चैनल हिन्दी भाषा को विश्व में प्रस्तुत करने में सक्षम हो रहे हैं।'' अक्षर साफ्टवेयर से हिन्दी में शब्द संसाधन का आरम्भ माना जाता है जो दिन–ब–दिन विकसित हो रहा है। यूनीकोड़ के कारण अब हिन्दी भाषा का इंटरनेट रूप लगातार ज्ञानवर्धन कर रहा है। कम्पयूटर पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रयोग के लिए आर.बी. एम. पी.सी. कंप्यूटर पर द्विभाषी शब्द संसाधन के कई पैकेज बाजार में मिलते हैं। हिन्दी भाषा के विकास में ब्लॉग की महत्वपूर्ण भूमिका है जो हिन्दी भाषा में लिखे जा रहे हैं। केबल, इंटनेट आदि साधनों से हिन्दी पूर्णरुप से विकसित हो रही है। समाचार खबरें जो चैनलों पर दिखाई जाती हैं उनका इंटरनेट वर्जन आ गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्तमान समय में जनसंचार माध्यम हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

भारत में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रचलन बहुत ही प्राचीन हैं। यह जनसंचार माध्यम का सशक्त माध्यम है। भले ही आजकल कई इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आ गए हैं परन्तु इसकी उपयोगिता कभी कम नहीं हुई है। हम यह भी कह सकते हैं कि इनकी माँग दिन प्रतिदिन बढ़ी ही है।

विश्व में कई पत्र एवं पत्रिकाएँ जैसे मारीशस की बसंत, स्वदेश, आक्रोश, इन्द्रधनुष । फिजी की फिजी टाइम्स, हिन्दी शांतिदूत, अमेरिका की साहित्य सौरभ शान्तिदूत पत्रिकाएँ हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ये पत्रिकाएँ भारतीय लेखकों की रचनाओं का अनुवाद कर एक नये तरीके से हिन्दी के प्रति अपने प्रेम को दर्शा रही हैं। इस तरीके से भी हिन्दी का विकास हो रहा है। यह जनसंचार के साधनों का ही योगदान है कि अब संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हिन्दी भाषा के प्रति उत्सुकता बढ़ी है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपने रेडियो का प्रसारण अन्य भाषाओं के साथ साथ हिन्दी में भी करना आरम्भ कर दिया है। अगस्त सन् 2018 ई0 से संयुक्त राष्ट्र ने साप्ताहिक हिन्दी बुलेटिन प्रारम्भ किया है। भारत सरकार भी हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए अथक प्रयास कर रही है।

एक समय था जब पढ़े–लिखे होने का मतलब अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना था, इस कारण से पूर्व में हमारे देश में अंग्रेजी समाचार पत्र–पत्रिकाएँ छपती थीं। किन्तु शिक्षा का प्रसार बढ़ने से लोगों में बदलाव आने लगे और लोग हिंदी एवं अपनी क्षेत्रीय भाषा के तरफ रुझान

करने लगें। यह प्रक्रिया दुतरफा चली। एक ओर जहाँ साक्षरता दर बढ़ने से हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ने के इच्छुक लोगों की संख्या में वृद्धि हुई, वहीं हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या बढ़ने से हिंदी के बोलचाल और प्रयोग में बढ़ोतरी हुई। हिंदी समाचार पत्र जब से प्रत्येक जिलों में आने लगे हैं तब से हिंदी और लोकप्रिय होने लगी है। आज यह देखा जा सकता है कि जहाँ कुछ लोगों की बैठने आदि की व्यवस्था होती है वहाँ ज्यादातर हिंदी में समाचार पत्र–पत्रिकाएँ मिलती हैं। अंग्रेजी की सभी प्रमुख समाचार पत्रिकाएँ अपने हिंदी संस्करण भी निकाल रहीं हैं जो काफी लोकप्रिय हो रही हैं। जहाँ तक सवाल हिंदी पत्रिकाओं का है वो अपने विषय वस्तु जैसे–छोटी–छोटी कहानियों का संग्रह, फिल्मी जगत की खबरें, खान–पकवान बनाने की विधि, फैशन, स्वास्थ्य, विज्ञान, खेल–कूद आदि सामग्री के कारण लोकप्रिय हो रहीं हैं। ये जन संचार माध्यम बिना शोर मचाये हिंदी का प्रसार–प्रचार देश दुनिया के गाँवों–गाँवों तक कर रहे हैं।

सिनेमा जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम है। सिनेमा के आविष्कार का श्रेय थॉमस अल्वा एडिसन को जाता है। भारत में बनी पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' है, जिसे बनाने का श्रेय दादा साहेब फाल्के को जाता है। सन् 1931 ई0 में पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' बनी। आज हिन्दी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई है तो इसमें हिन्दी फिल्मों का भी महत्त्पूर्ण योगदान है। हिन्दी चैनलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बाजार की स्पर्धा के कारण आज अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी में रूपान्तरण हो रहा है। संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। हिन्दी सिनेमा, जिसे वॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है। फिल्म उद्योग मुख्यतः मुम्बई शहर में बसा है। यहाँ से बनने वाली फिल्में भारत, पाकिस्तान और दुनियों के कई देशों में रिलीज होती हैं। इन फिल्मों में हिन्दी के साथ–साथ अवधी, बम्बईया हिन्दी, कलकतिया हिन्दी, भोजपुरी, राजस्थानी जैसी बोलियाँ भी संवाद और गानों में प्रयुक्त होती हैं। भोजपुरी बोली में अनेक फिल्में रिलीज होती रहती हैं, जिसे 'भोजीवुड' भी कहा जाता है। वॉलीवुड दुनिया में फिल्म निर्माण के सबसे बड़े केन्द्रों में से एक है। ''हिन्दी सिनेमा पर शुरू से ही पॉपुलर या लोकप्रिय फिल्मों का दबदबा रहा है। वर्तमान में भारत हर साल लगभग अनेकों फिल्मों का निर्माण करता है और दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म निर्माता देश बन गया है। यहाँ हिन्दी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषा और बोली में भी फिल्में बनती हैं और खूब चलती हैं।

इण्टरनेट, इण्टरनेशनल नेटवर्किंग का संक्षिप्ताक्षर हैं। प्रो0 जे0 सी0 लिक्लाइडर ने सर्वप्रथम इण्टरनेट की स्थापना का विचार सन् 1962 ई0 में दिया था। इसी कारण इन्हें 'इण्टरनेट का जनक' भी माना जाता है। इण्टरनेट का प्रारम्भ सन् 1969 ई0 में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा अर्पानेट के विकास द्वारा किया गया। अर्पानेट को दुनिया का पहला नेटवर्क कहा जाता है। इण्टरनेट जनसंचार का सबसे नया और तेजी से लोकप्रिय हो रहा है, जिसमें प्रिन्ट मीडिया, टेलीवीजन, किताबें, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण मौजूद हैं। इसकी पहुँच दुनिया के कोने–कोने तक है, और उसकी रफ्तार का कोई जवाब नहीं है। इसमें सारे माध्यमों का समागम है। इन्टरनेट पर कोई,कहीं भी दुनिया के किसी भी कोने से छपने वाले अखबार या पत्रिका में छपी सामग्री पढ़ सकता है, रेडियो सुन सुकता है व सिनेमा देख सकता है, किताब पढ़ सकता है और विश्वव्यापी जाल के भीतर जमा करोड़ों पन्नों में से पत्र भर में अपने मतलब की सामग्री को खोज सकता है। इण्टरनेट ने हम सभी को विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है।

सन् 2000 ई0 में हिन्दी का पहला वेब पोर्टल अस्तित्त्व में आया, तभी से इंटरनेट पर हिन्दी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारम्भ कर दी जो

अब रफ्तार पकड़ चुकी है। इण्टरनेट पर हिन्दी का सफर रोमन लिपि से प्रारम्भ होता है और फॉण्ट जैसी समस्याओं से जूझते हुए धीरे–धीरे यह देवनागरी लिपि तक पहुँच गया है। यूनीकोड, मंगल, कुर्तिदेव जैसे यूनीवर्सल फॉण्टों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया है। आज इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य से सम्बंधित अनेक ई–पत्रिकाएँ देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए ब्लॉग एक महत्त्वपूर्ण साधन बन चुका है, जो हर समय सुगमता से ब्लॉगर और पाठक दोनों के लिए उपलब्ध है। कुछ विद्वानों को मानना है कि आलोक कुमार हिन्दी के पहले ब्लॉगर हैं, जिन्होने ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' बनाया। आज हिन्दी में ब्लॉगों की संख्या एक लाख से ऊपर पहुँच चुकी है। हिन्दी पुस्तकों के ई–संस्करण के सम्बंध में अभी तक सबसे सराहनीय प्रयास महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने किया है। इसकी वेबसाइट www.hindisamay.com पर हिन्दी के लगभग 1000 रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्यामसुन्दर दास आदि की ग्रंथावलियों के साथ–साथ समकालीन रचनाकारों की रचनाओं को भी इसमें स्थान दिया गया है। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि वर्धा विश्वविद्यालय ने हिन्दी शिक्षकों व शोधार्थियों को एक चलता फिरता पुस्तकालय मुहैया कराया है।

भारत में यदि जनसंचार माध्यमों के योगदान को देखा जाये तो यह देखने को मिलता है कि जनसंचार माध्यम के विभिन्न प्रारूपों ने मिलकर हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है । और इन सबके अलावा इसमें भारत के नेताओं का भी योगदान कम नहीं आंका जा सकता है। जो यू.न.ओ. जैसी संस्थानों में जाकर अपना भाषण हिंदी में दिये हैं। यही वे सब तत्व हैं जो हिंदी की उपयोगिता को और सुदृढ़ बनाते हैं। इन सब के परिणाम स्वरूप ही आज विश्व के कई देशों में हिंदी की कक्षाएँ संचालित हो रही हैं, जिससे हिन्दी राष्ट्र अपनी भाषा के प्रति गौरवांवित होता है।

संदर्भ

1. अभिव्यक्ति और माध्यम–एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, सं0–2014
2. गौतम, रूपचंद, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी, दिल्ली, नटराज प्रकाशन 2003
3. तिवारी डॉ0 अर्जुन, सं0–हिन्दी पत्रकारिता का विकास– भाग–2, उ0 प्र0 रा0 ट0 मु0 वि0 वि0, इलाहाबाद, सं0–2012
4. भारत में सामाजिक परिवर्तन–सं0 महेन्द्र नारायण कर्ण, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, सं0–2003
5. तिवारी डॉ0 अर्जुन, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव क्षेत्र–सं0 भाग–4, उ0 प्र0 रा0 ट0 मु0 वि0 वि0, इलाहाबाद, सं0–2012
6. इन्द्रप्रस्थ भारती : राजभाषा हिन्दी स्वर्णजयंती अंक, अक्टूबर–दिसम्बर 1999
7. आलोक, डॉ0 ठाकुरदत्त शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सूद, डॉ0 हरमोहन लाल, डॉ0 देवेन्द्र कुमार, हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर,
9. श्रीधर विजय दत्त, भारतीय पत्रकारिता कोष, खण्ड–दो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. चतुर्वेदी, डॉ0 रामस्वरूप, समकालीन हिन्दी साहित्य विविध परिदृश्य,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

11. http//www.globalization101.org/what-is-globalization.
12. http://www.abhivyakti-hindi.org/Sribandh/2007/bhumandalikaran. htm.
13. चौबे कृपाशंकर, पत्रकारिता के उत्तर, आधुनिक चरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
14. देशपाण्डे कल्पना, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, नई दिल्ली, हिन्दी बुक सैन्टर, 2019.
15. http:www.rachanakar.org//
16. www.abhivyakti-hindi.org/z